प्रातः क्लास 23-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रोज बच्चों को कहना पड़ता है कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझा रहे हैं। ऐसा क्यों कहते हैं कि बच्चे अपने को आत्मा समझें। बच्चों को यह याद पड़े बरोबर बेहद का बाप हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। सर्विस के लिये भी भिन्न2 पायन्ट्स पर समझाते हैं। बच्चे कहते हैं सर्विस नहीं है, हम बाहर में सर्विस कैसे करें। बाप सर्विस की युक्तियां तो बहुत ही सहज बताते हैं। अभी जैसे रघुनाथ का मंदिर है वहां भी सर्विस कर सकते हो। चित्र हाथ में हो। रघुनाथ का काला चित्र भी हो गोरा चित्र भी हो। नारायण का भी ऐसे। गोरा भी हो काला भी हो। कृष्ण का भी ऐसे। शिव बाबा का भी गोरा चित्र भी हो काला चित्र भी हो। भल छोटे चित्र ही हों। कृष्ण का इतना छोटा चित्र भी बनाते हैं। तुम मंदिर के पुजारी से पूछ सकते हो इनको काला क्यों बनाया है। जब कि असल में गोरा था। वास्तव में शरीर तो काला नहीं होता है। तुम्हारे पास बहुत अच्छे2 गोरे भी रहते हैं परन्तु इनको काला क्यों बनाया है? यह तो तुम बच्चों को समझाया है। नारायण कोई काला नहीं बनता। उनको तो महाराजा श्री ना0 कहा जाता है। यह समझाया जाता है आत्मा कैसे भिन्न2 नाम रूप धारण करते2 नीचे उतरती हैं। जब से काम चिक्षा पर चढ़ते हैं तबसे ही काला मे बनते हैं। परन्तु उस समय तो नाम रूप वही श्री ना0 का नहीं है ना। रामचन्द्र को भी ऐसा काला दिखाते हैं। गोयाराम की यह इनसल्ट करते हैं। वह तो राजा था उनको काला बना यह तो इनसल्ट है। ऐसे ही इनसल्ट शिव बाबा की भी करते हैं। श्रीना0 की भी करते हैं। और कृष्ण की भी करते हैं। मुख्य हैं ही यह। जगतनाथ वा श्रीनाथ द्वार में भी जाना तो है ना बच्चों को। वहां ढेर यात्रु होते हैं। तुमको निमंत्रण भी मिलते हैं। बोलो हम श्रीनाथ की जीवन कहानी 84 जन्मों की सुनाते हैं। भाईयो और बहनो आकर सुनो। ऐसा भाषण और तो कोई कर न सके। तुम समझा सकते हो यह काला क्यों बने हैं। 84 जन्म तो हरेक मनुष्य चाहे देवता हो चाहे असुर हो 84 जन्म तो लेते ही हैं। पावन से पतित जरूर बनते हैं। यह पावन थे फिर वाममार्ग में गये तो उनको काला कर दिया है। काम चिक्षा पर बैठने से आयरनएजेड बन जाते हैं। आयरन का रंग काला होता है। सोने का गोल्डेन होता है। उनको कहेंगे गोरा। वही फिर 84 जन्मों के बाद काला बनते हैं। सीढ़ी का चित्र भी जरूर हाथ में हो। सीढ़ी भी बड़ी हो जो कोई भी दूर से देख सकेंगे अच्छी रीत। और तुम समझा देंगे कि अभी भारत की यह गति है। लिखा हुआ भी है उत्थान और पतन। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। समझाना है यह दुनिया का चक्र कैसे फिरता है। गोल्डेन एज, सिलवर एज, कापर आयरन। फिर यह पुरुषोत्तम संगम युग भी दिखाना है। भल बहुत चित्र न उठाओ। सीढ़ी का चित्र तो मुख्य है भारत के लिये। तुम समझा सकते हो अभी फिर से पतित से पावन तुम कैसे बन सकते हो। पतित पावन तो एक ही बाप है। उनको याद करने से सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है। तुम बच्चों में यह सारा ज्ञान है। अज्ञानता सभी में है। अज्ञान नींद में सभी सोये हुये हैं। भारत ज्ञान में था तो बहुत धनवान था। अभी भारत अज्ञान में है। कितना कंगाल है। ज्ञानी मनुष्य और अज्ञानी मनुष्य होते हैं ना। ज्ञानी मनुष्य को देवता, अज्ञानी मनुष्य को असुर कहना पड़े। देवी देवता और मनुष्य तो नामी-ग्रामी है। देवी देवताओं का राज्य सतयुग त्रेता में होता है। मनुष्यों का होता है द्वापर कलियुग में। यह बच्चों की बुद्धि में सदैव रहना चाहिए। सर्विस कैसे करो वह भी बाप समझाते रहते हैं। भक्ति मार्ग के शास्त्र आधा कल्प से पढ़ते आये फायदा तो कुछ भी नहीं हुआ। पढ़ते2 और ही नीचे गिरे हैं। भल कितने भी बड़े2 विद्वान आचार्य हैं, इस सन्यासधर्म को 500 वर्ष हुये हैं नीचे ही उतरते आये हैं। सीढ़ी का चित्र समझाने लिये बहुत ही अच्छा है। बाप कहते हैं भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, शरीर निर्वाह लिये धंधा आदि भी तो करना ही है। जिसको जो विद्या भी पढ़नी है। बाकी जो टाईम मिले तो सर्विस के लिये ख्याल करना चाहिए। हम औरों का कल्याण कैसे करें। यहां तो तुम बहुतों का कल्याण नहीं कर सकते हो। यहां तो आते ही हो बाप की मुरली सुनने। इसमें ही जादू है। बाप को जादूगर भी कहते हैं ना। गाते भी हैं मुरली तेरी में जादू

है। तुम्हारे मुख से जो मुरली बजती है उसमें जादू है, मनुष्य से देवता बन जाते हैं। ऐसा कोई जादूगर होता नहीं सिवाय बाप के। गाते भी हैं मनुष्य से देवता किये करत न लागे बार। पुरानी दुनिया से नई होती जरूर है। पुरानी का विनाश भी जरूर होना है। इस समय ही तुम राजयोग सीखते हो। तो जरूर राजा भी बनना है। अभी तुम बच्चे समझते हो 84 जन्मों के बाद फिर पहला नम्बर जन्म ~~अपवित्र~~ चाहिए। क्योंकि वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट होती है। सतयुग त्रेता ... जो भी होकर गया है सो फिर रिपीट होना है जरूर। यहां तुम बैठे हो तो अभी मैं यह याद करना है कि हम वापस जाते हैं। फिर सतोप्रधान देवी देवता बनते हैं। इस समय हम तमोप्रधान हैं। मनुष्य तो मनुष्य ही हैं। परन्तु देवी गुण धारण करने से, सतोप्रधान बनने से उनको देवता कहा जाता है। अभी मनुष्यों में देवीगुण नहीं हैं। तो सर्विस तुम कहां भी कर सकते हो। कितना भी धंधा आदि करते हो ~~तुम~~ गृहस्थ व्यवहार में रहते यह कमाई भी करनी है। इसमें मुख्य बात है पवित्रता की। प्युरिटी है तो पीस प्रास्पर्टी भी है। कम्पलिट प्युर बन गये तो फिर यहां नहीं रह सकते। क्योंकि हमको शान्तिधाम जरूर जाना है। आत्मा पवित्र बन गई तो फिर आत्मा को इस पुरानी शरीर के साथ नहीं रहना है। यह तो अपवित्र है। 5तत्व ही अपवित्र है। शरीर भी इन से ही बनते हैं। इनको मिट्टी का पुतला कहा जाता है। 5तत्वों का शरीर एक खलास होता है दूसरा बनता है। आत्मा तो है ही। आत्मा कोई चीज बनने की नहीं है। शरीर पहले कितना छोटा फिर कितना बड़ा होता है। कितने आरगन्स मिलते हैं जिससे आत्मा सारा पार्ट बजाती है। यह दुनिया ही वन्डरफुल है। सभी से वन्डरफुल है बाप जो आत्माओं को परिचय देते हैं। हम आत्मा कितनी छोटी हैं। फिर शरीर कैसे बनता है। 7-8 मास का जब होता है तो आत्मा प्रवेश करती है। हरेक चीज वन्डरफुल है। जानवर आदि के शरीर कैसे बनते हैं वन्डर है ना। आत्मा तो सभी में नहीं छोटी है। हाथी कितना बड़ा है उनमें इतनी छोटी आत्मा जाकर बैठता है। बाप तो मनुष्य योनि की बात समझाते हैं। मनुष्य कितने जन्म लेते हैं। 84लाख जन्म तो है नहीं। समझाया है जितने धर्म हैं इतनी वैराईटी बनती हैं। हरेक आत्मा कितने फिचर्स का शरीर लेती है। वन्डर है ना। फिर जब चक्र रिपीट होता है तो वही छोटी आत्मा, उनको वही शरीर मिलता है वही उनका पार्ट रिपीट होता है। हर जन्म में फिचर्स नाम रूप आदि बदल जाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कृष्ण काला कृष्ण गोरा। नहीं। उनकी आत्मा पहले गोरी थी 84 जन्म लेते2 काली बनती है, तुम्हारे में भी भिन्न भिन्न फिचर्स, भिन्न2 शरीर लेकर पार्ट बजाते हैं। यह भी ड्रामा है। तुम बच्चों को कब भी कोई फिकरात न होनी चाहिए। सभी एक्टर्स हैं। एक शरीर छोड़ दूसरा लेकर पार्ट बजाते हैं। हर जन्म में सम्बन्ध आदि बदल जाता है। तो बाप समझाते हैं यह बना बनाया ड्रामा है। आत्मा ही 84 जन्म लेते2 तमोप्रधान बनी है। अभी फिर आत्मा को सतोप्रधान बनना है। पावन तो जरूर बनना है। पावन सृष्टि थी। अभी पतित है फिर पावन होनी है। सतो० और तमो० अक्षर तो है ना। सतोप्रधान सृष्टि, फिर सतो रजो तमो बनती हैं। अभी जो तमोप्रधान बनी है वह फिर सतोप्रधान कैसे बने। यह बरसात की पानी से तो पावन नहीं बनेंगे। बरसात से तो मनुष्यों का मौत भी हो जाता है। फ्लैड्स हो जाते हैं तो कितने डूब मरते हैं। अभी बाप समझाते हैं यह सभी खण्ड नहीं रहेंगे। सभी डूब मरेंगे। नेचरल कैलामिटिज भी मदद देंगी। कितने ढेर मनुष्य, जानवर आदि बह जाते हैं। ऐसे नहीं कि पानी से पावन बन जाते हैं। वह तो शरीर चला जाता है। शरीरों को तो पतित से पावन नहीं बनना है। पावन बनना है आत्मा को। पतित-पावन तो एक बाप ही है' भल बहुजगतगुरु कहलाते हैं परन्तु गुरु का तो काम है सदगति करना। वह तो एक ही बाप सदगति दाता है। बाप सदगुरु ही सदगतिदाता हैं। बाप समझाते तो बहुत रहते हैं' यह भी सुनते हैं ना। गुरु लोग भी बाजु में शिष्य को बिठाते हैं सिखाने लिये। यह भी उनके बाजु में बैठा है। बाप समझाते हैं यह लायक है समझने का। तो यह भी समझते होंगे ना। इसलिये गुरुब्रह्मा नम्बरवन में आ जाता है। शंकर के लिये तो कहते हैं आंख खोलने से भस्म कर देते हैं। फिर उनको तो गुरु नहीं कहा जाये। फिर भी बाप कहते हैं बच्चों को मामेकं याद करो। कल भी बाप ने समझाया कई बच्चे कहते हैं -

65

23-11-62

इतने धंधे -धोरी आदि की फिकरात में रहते हम अपने को आत्मा समझ बाप को कैसे याद करें। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में भी तुम्हें ईश्वर है भगवान कह याद करते थे ना। याद तब करते हैं जब कुछ दुःख होता है। मरने समय भी कहते हैं राम राम बोलो। बहुत संस्थाएं हैं जो राम नाम का दान देती है। जैसे तुम ज्ञान का दान देते हो फिर वह कह देते राम बोलो राम बोलो। तुम भी कहते हो शिव बाबा को याद करो। वह तो शिव को जानते ही नहीं राम ही कह देते हैं। राम राम कहना सहज होता है। अभी यह भी क्यों कहते हैं कि राम कहो। जब कि परमात्मा सर्वव्यापी है। बाप बैठ समझाते हैं राम वा कृष्ण को परमात्मा नहीं कहा जाता। कृष्ण भी देवता है राम के लिये समझाया है वह सेमी देवता है। दो कला कम हो जाते हैं ना। हर एक चीज की कला तो कम होती ही है। कपड़ा भी पहले नया फिर पुराना होता है। जैसे कपड़ा धोबी पास जाने से कपड़े की आयु कम होती जाती है ना। तो बाप इतनी बातें समझाते2 फिर भी कहते हैं मेरे मीठे2 बच्चों रूहानी बच्चों अपने को आत्मा समझो। सिमर सिमर सुख पाओ। यहां तो यह दुःखधाम है। बाप को और वर्से को सिमरते रहो। याद करते2 अथाह सुख पावेंगे। कल कलेश बिमारी रोग आदि जो भी हैं सभी मिट जावेंगे। तुम 21 जन्मों के लिये निरोगी बन जाते हो। कल कलेश मिटे सभी तन के जीवनमुक्ति पद पाओ। गाते हैं परन्तु एक्ट में नहीं आते हैं। तुमको बाप प्रैक्टीकल में बैठ समझाते हैं। बाप को सिमरो तो तुम्हारी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जावेंगी। सुखी हो जावेंगे। मोचरा खाकर मानी टूकड़ खाना अच्छा नहीं हैं। सभी ताजी रोटी ही पसन्द करते हैं। आजकल तो तेल ही मिलता है। वहां तो घी की नदियां बहती हैं। तो बच्चों को यहां क्या सुमिरण करना चाहिए। बाबा ऐसे भी नहीं कहते यहां बैठकर बाप को याद करो। नहीं। चलते-फिरते घूमते शिव बाबा को याद करना है। नौकरी आदि भी करनी है। बाप की याद बुधि में रहनी चाहिए। लौकिक बाप के बच्चे भी नौकरी आदि करते हैं बाप तो याद रहता ही है ना। कोई भी पूछेगा तो झट बतावेंगे हम किसके बच्चे हैं। बुधि में बाप ही प्रापर्टी भी याद रहती है। तुम भी बाप के बच्चे बने हो। तो प्रापर्टी भी याद है। बाप को याद करना है। और कोई से सम्बन्ध नहीं। आत्मा में ही सारा पार्ट नूंधा हुआ है। जो इनर्जी होता है। इस ब्राह्मण कुल में तुम्हारा जो कल्प2 पार्ट मिला है वही इनर्जी होता रहता है। बाप समझाते हैं खाना बनाओ, मिठाई बनाओ शिव बाबा को याद करते रहो। शिव बाबा को याद कर बनावेंगे तो मिठाई खाने वाले का भी कल्याण होगा। कहां भी सा० हो सकता है। ब्रह्मा का भी सा० हो सकता है शुध अन्न पड़ता है तो ब्रह्मा का, विष्णु का सा० कर सकते हैं। ब्रह्मा है यहां। ब्रह्माकुमार-कुमारियों का नाम तो होता है ना। बहुतों को सा० होते रहेंगे। क्योंकि बाप को याद करते हैं ना। बाप युक्तियां तो बहुत बताते हैं। वह मुख से राम राम बोलते हैं। तुमको मुख से कुछ बोलना नहीं है। जैसे लोग समझते हैं गुरुनानक को भोग लगा रहे हैं। तुम भी समझते हो हम शिव बाबा के लिये भोग बनाते हैं। शिव बाबा को याद कर बनावेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोग में ताकत हो जाती हैं। इस लिये बाबा भोजन बनाने वालों को भी कहते हैं शिव बाबा को याद कर बनाओ। लिखा हुआ भी है शिव बाबा याद है? याद में रह बनावेंगे तो खाने वालों को ताकत मिलेगी। हृदय शुध होगा। ब्रह्मा भोजन का गाय भी है ना। ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन देवतायें भी पसन्द करते हैं। यह भी शास्त्रों में है। ब्रह्मणों का बनाया हुआ भोजन खाने से बुधि शुध हो जाती है। ताकत रहती है। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। ब्रह्मा भोजन का जिनको कदर रहता है थाली धोकर भी दहपी लेते हैं। बहुत ऊंच समझते हैं। भोजन बिगर तो न सके। फैशन में भोजन बिगर मर जाते हैं। आत्मा ही भोजन खाती है इन आरगन्स द्वारा। स्वाद लेती है। अच्छा वा बुरा तो आत्मा ने कहा ना। आत्मा है चैतन्य। शरीर तो जड़ है। आत्मा कहती है यह बहुत स्वादिष्ट भोजन है। यह बहुत ताकत वाला है। आगे चलते2 तुम जैसे2 उन्नति को पाते रहेंगे वैसे भोजन भी

तुमको ऐसा मिलता रहेगा। इसलिये बच्ची को भी कहते हैं शिव बाबा को याद कर भोजन बनाओ। बाप जो समझाते हैं उसको अमल में लाना चाहिए। तुम हो पियर घर वाले। जाते हो ससुर घर। सूक्ष्म वतनमें भी आपस में मिलते हो। भोग ले जाते हैं' देवताओं को भोग लगाते हैं ना। देवतायें आते हैं, तुम ब्राह्मण वहां जाते हो। वहां महफिल लगी रहती है। देवता बनते तो तुम ही हो ना। परन्तु पहचाने कैसे। तुम बच्चियां कहती हो फलासी2 आई थी। वहां मेला लगता था है। ध्यान में जाकर तुम रास-विलास भी करते हो। देवतायें और ब्राह्मण मिलते हैं। नशे में जाते हैं तो देवता बन जाते हैं फिर उतरते हैं तो ब्राह्मण बन जाते हैं। यह सभी तुमको सा0 होता है। देवतायें तो फिर इस रूप में ही आवेंगे ना। तुमको फीलिंग आती है वैकुण्ठ में जाकर रास-विलास भी करते हो। तो यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं कैसे यह दुनिया बदलती है। बच्चों को अनायास ही सा0 होते हैं। कोई को सिखाया नहीं जाता है। छोटे2 बच्चे आपे ही चले जाते थे। यह सभी ड्रामा में पार्ट नूंधा हुआ है। तुम समझते हो फिर 5000वर्ष बाद यहचक्र रिपीट होगा। बहुतों को घर बैठे भी सा0 होते हैं। बाबा थोड़ेही देखते हैं। अनायास ही जो नूंध है वह सा0 होता है। यह कोई नई बात नहीं है। तुम जानते हो हम बेहद की पुरानी सृष्टि का सन्यास करते हैं तो नई सृष्टि का मालिक बनते हैं। एक जन्म पवित्र बनने से हम 21 जन्म पवित्र नई दुनिया के मालिक बनते हैं तो क्यों नहीं पवित्र बनेंगे। कितनी प्रलोभन है। पुरानी सृष्टि तो खत्म होनी ही है तो क्यों न पवित्र बन बाप से हम पूरा वरसा ले लेवें। यह प्रलोभन है। सन्यासी तो कोई भी प्रलोभन देते नहीं। वह तो कहते हैं सुख काग विष्टा समान है। यह अन्तिम जन्म पवित्र बनने लिये यह बच्चियां कितनी सितम सहन करती हैं। कामेषु क्रोधेषु हैं ना। काम की आशा न पूरी होनेसे फिर बहुत मारते हैं। बाप जानते हैं पवित्र दुनिया की स्थापना जरूर होनी है। पवित्रता फर्स्ट। मूल बात है कि बाप को याद करो। इस दुःखधाम को भूल अपने सुखधाम को याद करते रहो। [illegible] दुःखधाम है [illegible] मरते हैं ना। सुखधाम में कब कोई मरते नहीं। यह सुखधाम दुःखधाम अथवा मृत्युलोक और अमरलोक का संगम। कितना बार यह चक्र फेरा होगा। हिसाब कर सकेंगे? कितना बार हम सालवेन्ट डनसालवेन्ट बने हैं। वह भल हिसाब निकालते हो 5000वर्ष में कितने मास कितने दिन घंटे मिनट मिनट सेकण्ड होते हैं। इनका हिसाब नहीं निकाल सकते। अच्छा मीठे2 बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुड मार्निंग और नमस्ते।

****

बापदादा के कमलहस्त लिखित पत्र की कापीः-

नूरे रत्न आलराउन्ड प्रिय याद प्यार बाद समाचार कि तार पाई कि मुरार जी देसाई ओपनिंग करेंगे। ओपनिंग के पहले गुलजार और स्वदेश उनको पूरा समझावें। विश्व में शान्तिइस होवनहार महाभारत विनाश बाद विश्व में भारत में देवी स्वराज्य 5000वर्ष पहले बिल्कुल कैसे स्थापन हो रहा है। जहां विश्व में शांति रहती है। एक राज्य एकभाषा, और विश्व में भारत का राज्य 100%पवित्रता सुख सम्पत्ति का योगबल से स्थापना प्रजापिता ब्रह्मा द्वाराऔर ब्रह्माकुमार-कुमारियां द्वारा होता है। हम प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियां हर 5000वर्ष बाद इस पुरुषोत्तम संगम युग पर योगबल और पवित्रताबल से विश्व में शान्ति कल्प2 स्थापनकरते हैं। अर्थात कल्प2 अब संगम युग पर हर 5000वर्ष बादयह ईश्वरीय सर्विस होती रहती है। जो पुरानी कलियुगी पतित दुनिया से सतयुगी पावन दुनिया की स्थापना होती रहती है। सिध कर बताओ गीता परमपिता ज्ञान का सागरपरमात्मा शिवको साधारण तन द्वारासीखाते हैं, पढ़ाते हैं। न कि श्रीकृष्ण। और पतित-पावन पानी न हैपरन्तु परमपिता परमात्मा ही है जो कहते हैं काम को जीतो तो जगतजीत बनो। पवित्रता की प्रशंसा की जाती है और जब कि इस पुरानी मृत्युलोक के अन्त में विनाश होनई अमरलोक स्था0 होती हैवा विश्व की बादशाही मिलती हैतो क्यों न कोई पवित्रता की प्रतिज्ञा करेंगे वा खड़ी बांधवावेंगे। सारा मदार पवित्रतापर है। प्युरिटी है तो पीस प्रास्पर्टी भी है। ऐसे म्युजियम में मंगायें बाण भरी ज्ञान का। लाओ जरूर दिखाने और समझाने। भले रात में साथ ले घंटा दो लिये ले आओ। लाना जरूर उद्घाटन के पहले। नहीं तो पल्टू [illegible] पड़ता है। म्युजियम अगर अच्छा हैतो वहां ले आओ। राजकुमार के कार वा बिलके का [illegible] परन्तु लाना जरूर। [illegible]